जब मुंबई का मीठा पानी खारा हो जाएगा

प्रमोद भार्गव

प्राचीन काल में समुद्र के खारे पानी को मीठा बनाने के असफल प्रयास लंकापति रावण ने किए थे। आजकल दुनिया के वैज्ञानिक लगातार इन कोशिशों में लगे हैं कि समुद्र के खारे पानी को पीने लायक बना लिया जाए ताकि भविष्य दृष्टाओं द्वारा इस सदी में पानी के लिए तीसरे विश्वयुद्ध की जो आशंकाएं जताई जा रही हैं उन पर पूर्ण विराम लग जाए। खारा पानी मीठे में कब तब्दील होगा इसके बारे में फिलहाल कुछ निश्चित नहीं किया जा सकता लेकिन मुंबई और समुद्र तटीय महानगरों में गहराई से जल दोहन की वर्तमान प्रवृत्ति जारी रही तो कई महानगरों का पीने योग्य पानी ज़रूर आने वाले एक-दो दशकों में खारा हो जाएगा। मीठे पानी में खारे पानी का मिश्रण एक आसन्न खतरा है, जिस पर विचार किया जाना ज़रूरी है।

भूगर्भीय जल भण्डारों का बेइंतहा दोहन करने और शुद्ध पानी के प्राकृतिक भण्डारों के ऊपर बहुमंज़िली इमारतें खड़ी किए जाने से मुंबई में खारे पानी का खतरा मंडरा रहा है। भूजलविदों का मानना है कि मुंबई का भूजल समाप्त होने की स्थिति में है। जिस तेज़ी से वर्तमान में जल दोहन किया जा रहा है, इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में मुंबई के मीठे पानी के जल भण्डार रीत जाएंगे।

मुंबई का पानी लगातार खत्म होता जा रहा है। राजस्थान, गुजरात और पश्चिमी मध्यप्रदेश की भी कमोबेश यही हालत है। यहां तो एक हज़ार फीट नीचे तक पानी नहीं है। लेकिन मुंबई की स्थिति विपरीत है। यहां वर्षा का जो पानी ज़मीन सोखती है, वह निश्चित सीमा तक पहुंच जाता है। इसके नीचे समुद्री लवण वाला पानी बह रहा है, जो खारा है। ज़्यादा गहराई से दोहन करने पर बरसात का पानी लवण वाले पानी में मिलकर खारा हो जाएगा।

ज़मीन की भीतरी बनावट ऐसी होती है कि बारिश का पानी एक निर्धारित सीमा तक ही ज़मीन में उतराता रहता है, जो पीने योग्य होता है। लेकिन ज्यादा खुदाई के बाद मुंबई में खारा पानी आ जाता है क्योंकि वह समुद्री जल स्तर से प्रभावित होने लगता है।

यह खतरा भूमण्डल का तापमान लगातार बढ़ते जाने से और बढ़ गया है। दूर संवेदी उपग्रहों के माध्यम से हुए नए अध्ययनों से पता चलता है कि पश्चिमी अंटार्क्टिक में बिछी बर्फ की पट्टी बहुत तेज़ी से पिघल रही है। यह पानी समुद्री जल को बढ़ा रहा है। इस कारण एक ओर तो बांग्लादेश और मार्शल द्वीप समूहों का इस सदी में डूब जाने का आसन्न खतरा है वहीं दूसरी ओर समुद्री जलस्तर बढ़ने से तटीय रिहायशी इलाकों का पीने योग्य पानी खारे पानी में मिल जाने का खतरा है।

मुंबई में गहराई से जल दोहन के लिए वहां की पानी बेचने वाली टैंकर लॉबी को दोषी माना जा रहा है। ये टैंकर गहराई से लाखों लीटर मीठा पानी पम्पों से खींचकर भवन निर्माताओं और औद्योगिक इकाइयों को प्रदाय करते हैं। जलस्तर गिरने के लिए यही टैंकर लॉबी ज़िम्मेदार है।

भूजल विशेषज्ञों का मानना है कि मुंबई में अभी भी सैकड़ों स्थानों पर मीठे पानी के भण्डार गहरे में हैं। लेकिन इन स्थलों से जल दोहन नहीं किया जा सकता क्योंकि यहां बहुमंज़िली इमारतें खड़ी हो चुकी हैं। 1994 में लिए गए उपग्रह चित्रों से गहरे भूजल भण्डारों का पता चला था लेकिन उचित संरक्षण न किए जाने से ये लगातार रीतते चले जा रहे हैं।

मुंबई के कई कुओं का पानी सूख गया है। इससे अनुमान लगता है कि जल स्तर कितना नीचे चला गया है। जल स्तर गिरने का सबसे बड़ा कारण बड़े पैमाने पर आलीशान अट्टालिकाएं बनाने के लिए खोदी गई गहरी बुनियादें हैं। बुनियाद खोदते समय निकले पानी को पंप करके पक्के नालों के ज़रिए समुद्र में बहा देने से भूजलस्तर नीचे गिर जाने की समस्या भयावह हुई है। दूसरी तरफ बरसात के पानी को भी पक्के नालों व नालियों के मार्फत

समुद्र में बहा दिया जाता है। इसलिए जब पानी ज़मीन पर बहेगा ही नहीं तो ज़मीन उसे सोखगी कैसे? और ज़मीन जलग्रहण ही नहीं करेगी तो जल स्तर बढ़ेगा कैसे? इस सिलसिले में मुंबई के पानी में भीतरी भण्डारों पर अध्ययन कर चुके भूगर्भ शास्त्री डॉ. ऋषीकेश सामंत का कहना है कि नई इमारतों को मंज़ूरी देने से पहले भूजल स्तर की पड़ताल की जाए और यदि ऐसे स्थल पर पीने योग्य पर्याप्त जल है तो इमारतें खड़ी करने की इज़ाजत नहीं दी जानी चाहिए। राज्य सरकार को इस दिशा में गंभीरता से विचार कर निर्णयों पर सख्ती से अमल करना चाहिए। समुद्र का पानी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

1924 के पहले तक मुंबई के उपनगरों में बड़ी मात्रा में हरियाली थी और खाली ज़मीन पर भी पक्की सड़क या खरंजे नहीं थे। नाले आदि भी कच्चे थे और भवन निर्माण भी कम था। तब इन उपनगरों में जल भण्डार भी खूब थे एवं जल स्तर भी ऊपर था।

1924 के बाद से उपनगरों में भी बड़ी मात्रा में इमारतों की ृंखलाएं निर्मित होने लगीं। नाले और रास्ते भी पक्के बनाए जाने लगे। ऐसा होने से वर्षा का पानी जमीन में बैठने की बजाय सीधा समुद्र में समाने लगा। इस सबके बावजूद भूजल विशेषज्ञों का मानना है कि इन्हीं उपनगरों में अभी भी ऐसे सैकड़ों स्थल पहचाने जा सकते हैं जहां बड़ी मात्रा में पेयजल के भण्डार हैं। इन जगहों को चिन्हित कर देने के बाद यदि सरकार इन्हें भू-माफिया के हाथों में जाने से बचा सके तो मुंबई को खारे पानी के खतरे से उबारा व बचाया जा सकता है। उपलब्ध भूजल भण्डारों का संरक्षण व संवर्द्धन तभी संभव है जब सरकार की इच्छा शक्ति प्रबल हो जो फिलहाल तो दिखाई नहीं देती है। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 34 का हल

ना	इ	ट्रो	ज	न		पा		मा
भि			ल		आ	व	र्ध	न
क	द		च		व			सू
		प	र	व	र्ती		जी	न
	था	र				ला	भ	
खो	ट		स	ता	व	र		
ज			र्व		ज्ञ		को	स
बी	ज	प	त्र		पा			पा
न		थ		तु	त	ला	ह	ट